एक सबक़ जुगराफ़िये का

● इब्ने इंशा

जुगराफ़िया[1] में सबसे पहले यह बताया जाता है कि दुनिया गोल है। एक ज़माने बेशक यह चपटी होती थी, फिर गोल करार पायी गयी। गोल होने का फ़ायदा यह है कि लोग मशरिक़[2] की तरफ़ से जाते हैं, मग़रिब[3] की तरफ़ जा निकलते हैं। कोई उनको पकड़ नहीं सकता। स्मगलरों, मुजरिमों सियासतदानों के लिए तो बड़ी आसानी हो गयी है।

हिटलर ने ज़मीन को दोबारा चपटा करने की कोशिश की थी लेकिन वह कामयाब नहीं हुआ।

पुराने ज़माने में ज़मीन गुल मुहम्मद[4] की तरह साकिन[5] होती थी। सूरज और आसमान वग़ैरह उसके गिर्द घूमा करते थे। शायर कहता है, 'रात दिन गर्दिश में हैं, सात आसमान।' फिर गैलिलियो नामी एक शख़्स आया और उसने ज़मीन को सूरज के गिर्द घुमाना शुरू कर दिया। पादरी बहुत नाराज़ हुए कि यह हमको किस चक्कर में डाल दिया है। गैलिलियो को तो उन्होंने सज़ा देकर आइन्दा इस क़िस्म की हरकत से रोक दिया, ज़मीन को अलबत्ता नहीं रोक सके, बराबर हरकत किये जा रही थी।

शुरू में दुनिया में थोड़े ही मुल्क थे। लोग ख़ासी अमन-चैन की ज़िन्दगी बसर करते थे। पंद्रहवीं सदी में कोलम्बस ने अमरीका दरयाफ़्त[6] किया। उसके बारे में दो नज़रिये हैं — कुछ लोग कहते हैं कि उसका कसूर नहीं, वह हिन्दोस्तान को यानी हमको दरयाफ़्त करना चाहता था, मगर ग़लती से अमरीका को दरयाफ़्त कर बैठा। इस नज़रिये को इस बात से तक़वियत[7] मिलती है कि हम अभी तक दरयाफ़्त नहीं हो पाये।

दूसरा फरीक़ कहता है नहीं, कोलम्बस ने जानबूझकर यह हरकत की, यानी अमरीका दरयाफ़्त किया। बहरहाल अगर ये ग़लती भी थी तो बहुत संगीन ग़लती थी। कोलम्बस तो मर गया, उसका ख़ामियाज़ा हम लोग भुगत रहे हैं।

1 भूगोल 2 पूर्व 3 पश्चिम 4 गुल मुहम्मद शाह, कश्मीर के भू.पू. मुख्यमंत्री
5 स्थिर 6 आविष्कृत 7 बल

राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वारा प्रकाशित 'उर्दू की आखिरी किताब' से